प्रो. टी.एन. सिंह
कुलपति, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ
वाराणसी

प्रो. जे.पी. सिंहल
पूर्व कुलपति, राजस्थान विश्वविद्यालय
राष्ट्रीय अध्यक्ष,
अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

आयोजन सचिव

प्रो. अरविन्द पाण्डेय
विभागाध्यक्ष, शिक्षा संकाय,
महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी
मो. नं. 09451894651

संगोष्ठी संयोजक

प्रो. शैलेश कुमार मिश्र
राष्ट्रीय प्रभारी (शैक्षिक प्रकोष्ठ),
अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ
मो. नं. 09415446525

आयोजन समिति

प्रो. बेचन जायसवाल
प्रो. रविशंकर सिंह
प्रो. शंभू उपाध्याय
प्रो. चतुर्भुज नाथ तिवारी
डॉ. उदयन मिश्र
डॉ. सुरेन्द्र राय
डॉ. सखी देव
डॉ. वीणा वादिनी
डॉ. बब्बन प्रसाद सिंह
डॉ. विनय पाठक

भारतीय संस्कृति एवं शिक्षा

पर आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

24 - 25 नवम्बर, 2018

कार्यक्रम स्थल
गाँधी अध्ययन पीठ
महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

आयोजक
अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ
एवं
शिक्षा संकाय, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

तिथि. 24-5-25 नवम्बर

राष्ट्रीय संगोष्ठी

भारतीय संस्कृति एवं शिक्षा

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में समायोजित होने के लिए मनुष्य को अपने आचार, विचार, आहार, विहार एवं व्यवहार में अनेक प्रकार की परम्पराओं, रीति-रिवाजों, विचार, खान-पान, वेश-भूषा, नियम, विश्वास, अनुशासन आदि के सम्मिलित स्वरूप को ही संस्कृति कहा जाता है। इस प्रकार मानव द्वारा निर्मित वातावरण को ही संस्कृति कहा जाता है। किसी भी व्यक्ति का व्यक्तित्व सम्बन्धित समाज की संस्कृति का परिणाम होता है।

शिक्षा एवं संस्कृति में घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। किसी भी शिक्षा व्यवस्था का आधार उस समाज की विविध प्रकार की आवश्यकताएँ होती हैं। इन आवश्यकताओं के अनुरूप ही शिक्षा व्यवस्था की संकल्पना एवं व्यवस्था की जाती है। समाज की प्राथमिकता एवं वैचारिक विश्वासों का प्रत्यक्ष एवं स्पष्ट प्रभाव शिक्षा पर पड़ता है जैसे- यदि समाज में अध्यात्मिकता को प्राथमिकता प्रदान किये जाने पर शिक्षा व्यवस्था में अध्यात्मिकता दिखायी देती है परन्तु यदि समाज भौतिकवाद से प्रेरित है तो वहाँ की शिक्षा व्यवस्था में भौतिकतावादी मूल्यों का समावेश दिखायी देता है। इस प्रकार संस्कृति, शिक्षा, समाज एवं व्यक्तित्व परस्पर से सम्बन्धित होते हैं।

भारतवर्ष में शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण एवं आत्मसाक्षात्कार रहा है। 'सा विद्या या विमुक्तये' इसका मूलमन्त्र है- विद्या वह है जो व्यक्ति को अज्ञानरूपी बंधन से मुक्त करती है। जिससे वह स्वयं का साक्षात्कार करने में सक्षम होता है। छात्र गुरुकुल में गुरु के सानिध्य में शास्त्र के साथ-साथ चरित्र की भी शिक्षा ग्रहण करता था। जीवन का लक्ष्य श्रेयस् का वरण करना था परन्तु इसका यह अर्थ कदापि नहीं था कि भौतिक जीवन की उपेक्षा थी अथवा जीवन की समस्याओं से पलायन था। पर भौतिक जीवन साधन मात्र था माध्य नहीं। 20वीं सदी के अंतिम दशक से प्रारम्भ आर्थिक एवं राजनीतिक परिवर्तनों ने दुनिया के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश पर व्यापक प्रभाव डाला। निर्बाध वैश्विक व्यापार नीति ने अर्थ-व्यवस्था और राजनीति के समीकरण बदल दिये। इन सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तनों के परिणामस्वरूप समाज के मूल्यों, विश्वासों और परम्पराओं में नये आयामों का आविर्भाव हुआ। इसने स्वाभाविक रूप से शिक्षा के क्षेत्र में भी नवोन्मेषी वृष्टि का उद्घोष किया है। इस नये परिवेश ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था के समक्ष नयी चुनौतियाँ पेश की हैं। इन्हीं विषयों को केन्द्र में रखकर यह राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित है। संगोष्ठी के प्रमुख विचारणीय बिन्दु निम्नवत् हैं-

1. शिक्षा, संस्कृति एवं जीवन-मूल्य
2. जीवन का उद्देश्य एवं पारम्परिक भारतीय शिक्षा-व्यवस्था
3. राष्ट्र निर्माण में शिक्षा की भूमिका
4. वैश्विक परिवर्तनों का शैक्षिक परिवेश पर प्रभाव
5. शिक्षा के उभरते आयाम एवं चुनौतियाँ

प्रतिभागीगण उपरोक्त विषयों पर अपने आलेख arvindkumarpandey62@gmail.com तथा shaileshssvv@gmail.com पर दिनांक 15.11.2018 तक प्रेषित कर सकते हैं।

पंजीकरण प्रपत्र

नाम..

पद..

पता..

....

....

डिपार्टमेंट/इंस्टिट्यूट/कॉलेज/यूनिवर्सिटी............

....

....

शोधपत्र का शीर्षक..................................

....

फोन नं..

मोबाईल नं...

ईमेल..

पंजीकरण शुल्क : रु. 500/-

हस्ताक्षर..